विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
गृह पत्रिका

अंक - 16 अप्रैल - जून 2010

सम्पादकीय

अप्रैल-जून तिमाही अर्थात चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ माह में प्रकृति में परिवर्तन की परिसीमा होती है । जब वैशाख में ग्रीष्म ऋतु की गर्मी अचानक ज्येष्ठ में बरसात की ठंडी फुहारों में बदल जाती है । लाल रंगों की चुनर ओढ़े गुलमोहर गर्मी में भी मन को मोह लेते हैं तो पेड़ों पर बरसात में नहाए हरे पत्ते नेत्र सुखद लगते हैं ।

प्रकृति के इस जल्लोष के साथ कार्यालय में भी आनंद का वातावरण रहा । जब नराकासमिति, उत्तर मुंबई द्वारा दिनांक 7 मई 2010 को 'कार्यालय का राजभाषा प्रथम पुरस्कार', 'राजभाषा सम्मान' एवं 'छात्र गौरव' तीनों पुरस्कार पक्षेविसमिति को प्रदान किए गए । मुझे विश्वास है कि राजभाषा नीति अनुपालन के क्षेत्र में हम इसी तरह अग्रेसर रहेंगे ।

सभी विजेताओं का हार्दिक अभिनन्दन !

शुभकामनाओं सहित ।

(मनजीत सिंघ)
सदस्य सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उत्तर मुंबई का वर्ष 2008-09 के लिए छात्र गौरव पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री आम्रपाली सुपुत्री श्री आर.एन.भोरकड़े, स.कर्मचारी, पक्षेविसमिति, मुंबई

राजभाषा पुरस्कारों की झलक

वरिष्ठ हिन्दी रचनाकार, श्री लोचन सक्सेना के कर कमलों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उत्तर मुंबई का वर्ष 2008-09 के लिए कार्यालय का राजभाषा प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री ओ.प्र.सिंह, अधीक्षण अभियंता, पक्षेविसमिति, मुंबई

वरिष्ठ हिन्दी रचनाकार, श्री लोचन सक्सेना एवं श्री एम.पी. सिंह कोहली, प्रधान वैज्ञानिक, के.मा.शि.संस्थान, मुंबई से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उत्तर मुंबई का वर्ष 2008-09 के लिए राजभाषा सम्मान पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक पक्षेविसमिति, मुंबई

"तन्हाई"

,.लेखक: शेष कुमार सावंत
उच्च श्रेणी लिपिक

[रात, बूढ़ा (70-75 उम्र), बेडरूम, सोया है, हड़बड़ा के जागता है]

बूढ़ा: (घबराया) यशोदा-----यशोदा ----- (टार्च से) टाईम क्या हुआ ? -----(घड़ी) साढ़े दस----- रात कटती नहीं, (मोबाइल बजता है) अब कौन ? (चश्मा, मोबाइल) (Munna calling). यशोदा, यशोदा मुन्ना का फोन, सोई मतलब मर गई, (मोबाइल पर).... हाँ, मुन्ना बोल .... इतनी रात हो गई ..... अरे हाँ, मैं भूल गया, वहाँ तो दिन है । आजकल भूलने की बिमारी हो गई है..... हाँ..... हाँ..... हाँ..... मैं..... ठीक हूँ .....हाँ, बोल बेटा.....हाँ..... बहु कैसी है.....हाँ बेटा सोचा है..... पर ..... बेटा.....तू कहता है लेकिन.....काफी सालों से तू हम दोनों को वहाँ अपने पास बुला रहा है.....हाँ, बेटा तू हमारी देखभाल करेगा पर कभी तेरी माँ मेरी आढ़ लेकर मना कर रही थी और कभी मैं तेरी माँ का बहाना बनाकर न कर रहा था .....अब .....अब क्या बोल बेटा । बच्चे पढ़ रहे हैं न .....ठीक से ? .....डाँटना मत उन्हें ..... मैं ..... मैंने बहुत डाँटा तुझे..... बचपन से लेकर .....आँ..बहुत बोला मैं तुझे अनापशनाप.....मुझे.....मुझे.....अरे नहीं.....होनहार बेटा तू.....मेरी सुनता था.....और मैं तुझसे नाराज़ रहता था .....क्या खाँक सही ? .....गलत था मैं.....अब तू अपने बच्चों के साथ वैसा मत कर.....क्या ? आवाज नहीं आ रही है ? .....हाँ, नहीं सुनता ..... आज के बच्चे बहुत बोलते हैं सुनेंगे नहीं .....तू मेरी बात सुनकर खामोश रहता था । अब वो बात नहीं रही ..... न.....न..... तू कभी नाराज़ मत होना उस पर ..... अरे ! वो तेरा बेटा है .....जैसा मैंने किया वो तू मत कर ..... काश मैं.....या .....तुम सब यहाँ अपने देश में होते ? ..... हाँ.....हाँ..... सही कहता है तू.....तीन साल पहले हम दोनों आये थे तुम्हारे पास..... एक महीना रुके .....देखा .....हाँ बेटा सब जगह घुमाया तूने..... हाँ..... पर ..... बोल बेटा..... क्या बताऊँ इस मिट्टी की सुगंध नहीं थी वहाँ.....ऊब से गये थे हम दोनों.....यशोदा तो..... पता नहीं.....आऊँगा.....बेटा.....पता नहीं क्यूँ मन नहीं करता .....अरे तेरा दादा, दादी भी अपना गाँव छोड़कर मेरे पास नहीं आये.....वहाँ ही रहे.....शहर उन्हें पसन्द नहीं था.....परजात की यशोदा परप्रांती.....लेकिन मैंने उस वक्त सोचा था, बूढापे में मैं अपने बेटे के साथ रहूँगा..... पर यशोदा ..... क्या बताऊँ..... हाँ.....वो बाई दो वक्त का खाना देकर जाती है .....तू तो डॉक्टर है बेटा, बहु भी डॉक्टर है.....तुमसे क्या छुपाना..... बेटा वैसे कोई बिमारी नहीं पर लगता है बीमार हूँ ..... डॉक्टर..... वो बेचारा क्या करेगा..... कोशिश कर रहा है.....हाँ बेटा..... रिपोर्ट सब नार्मल है, वही तो रोना है.....बस थकान है.....चलना फिरना..... ? हाँ घर ही में ..... बाहर जाने को मन नहीं करता ..... बेटा मैंने बहुत सताया तुझे..... अपनी मनमानी की है न ? ..... तुझे मैंने स्विमिंग तक करने नहीं दिया । नहीं बेटा.....नहीं, पानी से डरता था मैं..... मेरा अच्छा बेटा.....तू तो लाखों में एक है..... बोलने दे बेटा.....न.....अरे तेरे जैसी औलाद पाना हरेक के नशीब में नहीं होता, मैं ही अपनी जिद पर अड़ जाता था..... न..... दवा.....हाँ..... यशोदा ने भी मुझे बहुत सहा..... तुम सब अच्छे पर.....मैंने.....मैं चार्टर्ड एकाउंटैंड ..... जिन्दगी भर गलतियाँ निकालने का काम किया .....मेरा स्वभाव वैसे ही हो गया..... बस गलती खोजो.....घर में भी मैं तुम लोगों की गलतियाँ खोजता रहा . .....मैं ही बुराॉ.....तू तो नहीं कहेगा..... मेरा होनहार बेटा जो है.....सब उजड़ गया.....जब तुम्हें प्यार देनना था, तब मैंने अपना कानून चलाया.....डाँटता रहा, अनापशनाप बोलता रहा.....उपदेश देता रहा .....तू .....तू .....सुन रहा है न ?.....बेटा..... हाँ तो मैं क्या कह रहा था..... सही नहीं था मैं.....गलत था.....तुझे, 70% मार्क मिले तो मैं 80% क्यों नहीं.....85% मिले तो 90 क्यों नहीं .....पढ़ाई.....पढ़ाई का मैने तुम पर बोढ डाला । हाँ, ऑफ कोर्स तुमने तरक्की की..... पर मैं.....मैं .....खुश नहीं था । ..... ये करो ओ करो ..... गलत था मैं.....तू मेरा मन रखने के लिए बोल रहा है .....हाँ.....पर.....आऊँगा .....हाँ..... तुम्हारी माँ को लेकर.....आँ.....आँ..... मैं.....मैं भूल गया..... यशोदा तो एक महीने पहले चली गई..... मैं.....मैं..... क्या करूँ.....यशोदा .....यशोदा(सीने में दर्द..... बढ़ता है) बेटा जल्दी आना.....यशोदा मैं आ रहा हूँ..... मैं आऊँगा बेटा तू जल्दी आना..... हाँ बेटा..... हाँ बेटा सुनता हूँ .....बेटा कुछ नहीं .....जल्दी आना..... (सीने में दर्द बढ़ता जाता है) (दिल का दौरा) (बूढ़ा मर जाता है) (मोबाइल बंद होता है).....(मोबाइल बजता है) Munna calling..... ....

समाचार दर्पण

- श्री एस सत्यनारायण, कार्यपालक अभियंता की दिनांक 21 अप्रैल 2010 को पक्षेविसमिति में अधीक्षण अभियंता के पद पर पदोन्नति होने पर पक्षेविसमिति परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ।

- श्री के.आर. राय, सहायक निदेशक ने दिनांक 30 जून 2010 को पक्षेविसमिति से अपने पद से त्याग पत्र दिया।

राजभाषा समाचार

- दिनांक 7 मई 2010 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई की 9 वीं बैठक में श्री ओ.प्र.सिंह, अधीक्षण अभियंता, श्री एम.एम.धकाते, राजभाषा अधिकारी / सहायक सचिव एवं श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने भाग लिया ।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई द्वारा दिनांक 7 मई 2010 को आयोजित राजभाषा पुरस्कार समारोह में वर्ष 2008-09 के राजभाषा पुरस्कार वितरित किए गए । इस अवसर पर पक्षेविसमिति को प्राप्त ''प्रथम पुरस्कार'' श्री ओ.प्र.सिंह, अधीक्षण अभियंता ने प्राप्त किया ।

- श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक को ''राजभाषा सम्मान'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

- सुश्री आम्रपाली, सुपुत्री श्री आर.एन.भोरकडे को छात्र गौरव पुरस्कार दिया गया ।

- ''पक्षेविसमिति का तकनीकी कार्य'' विषय पर दिनांक 17 जून 2010 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में श्री लक्ष्मीकांत सिंह राठौर, सहायक निदेशक ने व्याख्यान दिया । कुल 10 अधिकारियों / कर्मचारियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया ।